International Journal of Applied Research 2016; 2(5): 1130-1133

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(5): 1130-1133
www.allresearchjournal.com
Received: 15-03-2016
Accepted: 17-04-2016

डॉ० जितेन्द्र प्रसाद
शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० जितेन्द्र प्रसाद
शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

नेहरू जी के जीवन पर गांधीवाद के प्रभावों का अध्ययन

डॉ० जितेन्द्र प्रसाद

सारांशः
गांधी जी के समाज सुधार योजना नेहरू जी के मन में अति अच्छा लगा। उन्होंने इस बात को सोचा कि जब तक अछूतों को विकसित करके स्वतंत्रता संग्राम में उन्हें भाग लेने के लिए प्रेरित नहीं किया जायेगा तब तक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सफलता नही मिलेगी क्योंकि भारत में अछूतों की संख्या विस्तृत तादाद में थी। स्वतंत्रता संग्राम के समय यह देखा गया कि भारतीय समाज में बाल–विवाह की प्रथा एक बुराई के रूप विद्यमान है। गांधी जी के निर्देश पर कांग्रेस ने इसे भी समाप्त करने का मन बनाया। इसके लिए कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने गाँव–गाँव में घूमकर यह चेतना जागृत करना प्रारम्भ किया कि लड़कियों का कम उम्र में विवाह नही करना चाहिए। इस अभियान में नेहरू जी भी सम्मिलित हुए और इलाहाबाद के विभिन्न क्षेत्रों में घूम–घूमकर विकसित किया। उन्होंने अन्तर्जातीय विवाह का भी परामर्श दिया और उस समय पूरे राष्ट्र में हजारों कांग्रेस के सदस्यों ने अन्तर्जातीय विवाह भी किया तथा बाल–विवाह की प्रथा का समाप्त करने में जोरदार भूमिका निभायी। नेहरू जी भी इस सामाजिक सुधार कार्यक्रम में गांधी जी की प्रेरणा से तत्पर होकर भाग लेते रहे।

प्रस्तावनाः
1912 में जवाहर लाल नेहरू ब्रिटेन से शिक्षा प्राप्त कर भारत लौटे, उनके मन में राष्ट्र को स्वतंत्र कराने की भावना ब्रिटेन में ही जागृत हो गयी थी। इसी कारण उन्होंने कांग्रेस के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित होने का प्रयास किया। उन्होंने वकालत करने का मन बनाया था क्योंकि स्वतंत्रता संग्राम में भारत के अधिकांश वकील ही भाग ले रहे थे। इलाहाबाद में वकालत प्रारंभ करने के बाद उन्होंने कांग्रेस की गतिविधि को जानने के उद्देश्य से 1912 में बाँकीपुर कांग्रेस के अधिवेशन में पर्यवेक्षक के रूप में भाग लिया तथा गोपाल कृष्ण गोखले, मदन मोहन मालवीय, तेज नारायण प्रभु आदि के भाषणों को सुनकर उनके मन में राष्ट्र प्रेम की भावना प्रज्वलित हुई और 1912 से लेकर सभी कांग्रेस अधिवेशनों में भाग लेना प्रारंभ किया तथा कांग्रेस के नेताओं की गतिविधियों में हमेशा भाग लेते रहें। उनके पिता की इच्छा नहीं होने के बावजूद भी उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में विशेष रूचि दिखानी प्रारंभ की। जब 1915 में दक्षिण भारत में तिलक जी के नेतृत्व में होमरूल आन्दोलन चलाया जा रहा था तो नेहरू जी ने राष्ट्र प्रेम के कारण एनीवेसेन्ट के आन्दोलन में भाग लेना प्रारंभ किया। इस आन्दोलन ने उन्हें इतना साहस प्रदान किया कि राष्ट्र के लिए त्याग कर सकें।
1916 में लखनऊ में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इसमें गोखलें जी की प्रेरणा से गांधी जी कांग्रेस अधिवे ान में आये हुए थे। नेहरू जी भी उस अधिवेशन में भाग लेने गये थे। उन्होंने गांधी जी के ओजस्वी भाषण को सुना और उनके प्रति आकर्षित हुए। यह आकर्षण उतना प्रभावशाली तो नही था परन्तु गांधी जी अफ्रिका कि में भारतीयों के मांगो को ब्रिटिश सरकार से मनवाकर और भारतीयों को विजय दिलाकर लौटे थे। इसलिए नेहरू जी के मन में यह भावना जागृत हुई कि गांधी जी कुछ न कुछ करेंगे। 1916 में ही योगेन्द्र शुक्ल चम्पारण में ब्रिटिश शोषण के विरोध में आन्दोलन करने के लिए निवेदन करने आये। गांधी जी ने उस कांग्रेस अधिवेशन में तो चम्पारण के शोषण के विषय में कुछ नहीं कहा परन्तु शुक्ल जी को यह अश्वासन अवश्य दिया कि वे पत्राचार करें। वे जनवरी में कलकत्ता में कार्यकरिणी की बैठक में जायेंगे। गांधी जी योगेन्द्र शुक्ल को अपना कलकत्ता का पता लिखा दिया। 1917 में कलकत्ता में कांग्रेस कार्यकरिणी की बैठक हुई और गांधी जी को उसमें सदस्य चुन लिया गया। बैठक में गांधी जी ने व्यक्तिगत रूप से चम्पारण में ब्रिटिश सरकार के शोषण के विरूद्ध आन्दोलन चलाने का आग्रह किया। उनके आग्रह को मान लिया गया।
1917 में गांधी जी ने चम्पारण सत्याग्रह चलाया और सफलता भी पायी। इस सफलता को पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से नेहरू जी ने पढ़ा और हर्ष से विभोर हो गये। उनके मन में गांधी जी के प्रति अगाध श्रद्धा हो गई। इसी के फलस्वरूप नेहरू जी गांधी जी से हमेशा मिलते रहे और उनकी कार्यशैली आन्तरिक विचार और राजनीतिक क्रियाकलापों से संलग्न रहने लगें।

धीरे–धीरे नेहरू जी गांधी की शैली में विश्वास भी करने लगे। गांधी जी से बार–बार मिलने के कारण नेहरू जी गांधी जी के प्रिय व्यक्ति बन गये थे। नेहरू जी को यह विश्वास हो गया। नेहरू जी बार–बार कहने लगे कि गांधी जी स्वतंत्रता के लिए कोई न कोई शक्तिशाली आन्दोलन गांधी जी प्रारंभ करें। इसी बीच तुर्की के मुसलमानों पर ब्रिटेन का शोषणकारी रूख प्रारंभ होने लगा। इसके विरोध में तुर्की समस्त मुसलमानों ने संगठित होकर खिलाफत आन्दोलन प्रारंभ किया। इसकी आहट भी भारत में आयी। गांधी जी ने कांग्रेस को परामर्श दिया कि मुसलमान–हिन्दु एकता के लिए आन्दोलन को भारत में भी चलाया जाय। कांग्रेस ने गांधी जी के परामर्श को मान लिया। और भारत में भी खिलाफत आन्दोलन चलाया गया। गांधी जी के परामर्श के कारण नेहरू जी ने खुलकर इस आन्दोलन में भाग लिया। इस प्रकार नेहरू गांधी जी के परामर्श के आधार पर चलने लगे। प्रथम महायुद्ध के क्रम में ब्रिटेन ने भारत से वादा किया कि प्रथम महायुद्ध समाप्त होने पर भारत को कुछ छूट देगा। परन्तु प्रथम महायुद्ध के बाद ब्रिटिश सरकार ने भारत को रॉलेट एक्ट का तोफा दिया, जिससे गांधी जी भड़क उठे। गांधी जी रॉलेट एक्ट विरोधी आन्दोलन चलाने का सुझाव दिया और कांग्रेस ने अन्दोलन चलाया। गांधी जी के परामर्श पर नेहरू जी ने खुलकर इस आन्दोलन में भाग लिया और सरकार का जबर्दस्त विरोध किया। इस आन्दोलन के बाद नेहरू जी ने बार–बार गांधी जी को परामर्श दिया कि कोई शक्तिशाली आन्दोलन चलाया जाए।

1920 में महात्मा गांधी ने आन्दोलन चलाने का निर्णय लिया और उसकी तैयारी प्रारंभ की गयी। इसमें भी नेहरू जी ने खुले दिल से भाग लेना प्रारंभ किया। 1920 में असहयोग आन्दोलन चलाया गया और सम्पूर्ण भारत की जनता ने इसमें सहयोग दिया। गांधी जी के परामर्श पर नेहरू जी ने उत्तर प्रदेश के अनेकों जगहों पर सभा आयोजित करके लोगों में जागृत प्रदान करने का काम किया। नेहरू जी ने इस आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभायी। संयोगवश इसी आन्दोलन के क्रम में उत्तर प्रदेश के चौरा–चौरी में कुछ हिंसक घटनायें हुई। जिसके कारण गांधी जी मर्माहत हुए और आन्दोलन को स्थगित कर दिया। नेहरू जी गांधी जी के प्रिय शिष्य थे उन्होंने कहा कि इतने बड़े देश में छोटी–मोटी घटनाएं तो होती रहती है। इस घटना को लेकर इतना संगठित रूप में सम्पूर्ण भारत में चलने वाले सफल आन्दोलन को स्थगित करना उचित नहीं था। गांधी जी ने नेहरू जी को समझाया की हम हिंसक आन्दोलन से भारत को स्वतंत्र नही कर सकते क्योंकि भारत में अंग्रेज साधन सम्पन्न है और हम अतिदुर्वल हैं। हमें अहिंसात्मक आन्दोलन से ही भारत को स्वतंत्र कराना है। इस पर नेहरू जी शांत हो गये। इसके बाद गांधी जी ने कांग्रेस को सत्य और अहिंसा का संदेश दिया। भारत में अहिंसात्मक संघर्ष का प्रशिक्षण दिया जाने लगा। इसमें नेहरू जी ने खुले दिल से भाग लेना प्रारंभ किया। अहिंसात्मक आन्दोलन का प्रशिक्षण दिया जाने लगा। इसमें नेहरू जी ने खुले दिल से भाग लेना प्रारंभ किया। अहिंसात्मक आन्दोलन का प्रशिक्षण देकर सत्याग्रहियों की विशाल सेना बना ली। इसमें नेहरू जी ने भी सत्याग्रहियों का प्रशिक्षण लिया और गांधी जी के निदेश पर चलते रहे। इस प्रकार गांधी जी के परम भक्त नेता बन गये।

1930 में जब गांधी ने अछूतों द्धार आन्दोलन, नशाबंदी आन्दोलन और नमक सत्याग्रह चलाया तो नेहरू जी ने गांधी जी के परामर्श पर सक्रिय होकर सभी आन्दोलनों में व्यापक भूमिका निभायी। उन्होंने इन आन्दोलनों के क्रम में उत्तर प्रदेश में अनेकों जगहों पर भाषण देकर जनजागृत उत्पन्न की। आन्दोलनों में भाग लिया, अछुतो से गले मिले, शराब की दुकानों पर धरना, दिलाकर ब्रिटिश सरकार का व्यापक रूप से विरोध किया। महात्मा गांधी ने जब खादी आन्दोलन चलाया तो नेहरू जी ने उसमें प्रसन्नता से भाग ली। सूत काटना, कपड़ा बूनना और कुटीर उद्योंग की वस्तुओं की उत्पादन करना प्रारंभ किया। नेहरू जी के खादी सिद्धांत से इतने प्रभावित हुए कि विदेशी वस्त्र पहनना छोड़कर खादी वस्त्र पहनना प्रारंभ किया। उन्होंने खादी वस्त्र और टोपी धारण कर कांग्रेस में विस्तृत भूमिका निभा कर व्यापक लोकप्रियता अर्जित की तथा गांधी जी के सत्य तथा अहिंसा के सिद्धान्त को पूर्णरूपेण स्वीकार करते रहें। 1942 में जब महात्मा गांधी ने भारत छोड़ो आन्दोलन का श्रीगणेश किया तो नेहरू जी ने दिल खोलकर महात्मा गांधी के संकेत पर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ और महात्मा गांधी के प्रिय नेता नेहरू जी को पूरा सम्मान मिला क्योंकि स्वतंत्रता के बाद जब आन्तरिम सरकार बनी तो नेहरू जी स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने। इस प्रकार ऊपर वर्णित तथ्यों से यह बात स्पष्ट होती है कि 1916 से लेकर गांधी जी की मृत्यु तक नेहरू जी साथ रहें और उनके निदेशन में कार्य करते रहें। नेहरू जी, गांधी जी के सामजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक विचारों से व्यापक रूप से प्रभावित हुए।

महात्मा गांधी 1915 में अफ्रिका से भारत आये और राजनीतिक सन्यास लेने का निर्णय किया परन्तु गोखले जी के द्वारा बार–बार आग्रह करने पर भारत के विषय में ज्ञान प्राप्त करने के बाद राजनीतिक में भाग लेने का आश्वासन देकर भारत के विभिन्न भागों की यात्रा की और भारत के विषय में ज्ञान प्राप्त किया तथा यहाँ गरीबी और विवशता ने उन्हें भारत के विषय में कुछ करने का मन बनाया। इस काल में भारत में बाल गंगाधर तिलक और एनी बेसेन्ट के द्वारा होमरूल लीग की स्थापना और उसके द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन के प्रति सहमति व्यक्त की गई। 1916 में वे कांग्रेस के मंच पर लखनऊ अधिवेशन मे उपस्थित हुए। उनके द्वारा दिये गये भाषण की भुरी–भुरी प्रशंसा की गयी। वे 1917 की जनवरी में कलकत्ता में कांगेस कार्यकारिणी की सभा में गये तथा वहां वे कार्यकारिणी के सदस्य निर्वाचित हुए।

1916 के लखनऊ कांग्रेस के अधिवेशन के अवसर पर उनकी मुलाकात चम्पारण के एक किसान योगेन्द्र शुक्ल से हुई थी उन्होंने उन्हें चम्पारण आने और चम्पारण के लोगों की दशा देखने का निमंत्रण दिया और वहीं लोगों की दशा के संबंध में कांग्रेस से प्रस्ताव पारित कराने के लिए विशेष रूप से आग्रह किया। महात्मा गांधी ने उन्हें कलकत्ता से पत्राचार की बात की। दोनों में पत्राचार चलता रहा। कतकत्ता के कांग्रेस कार्यकारिणी में गांधी जी ने अपने व्यक्तिगत रूप से चम्पारण सत्याग्रह चलाने का निश्चय किया और बाद में 1917 के अप्रैल में वे शुक्लजी के साथ चम्पारण यात्रा पर गये और चम्पारण सत्याग्रह चलाकर व्यापक रूप से सफलता पायीं तथा वहाँ पर किसानों को नील की खेती को समाप्त किया तथा अंग्रजों के शोषण से रक्षा की। इन सभी बातों की जानकारी नेहरू जी को समय–समय पर मिलती रही और उनके चम्पारण सत्याग्रह की सफलता से नेहरूजी चकित हो गये। फलतः नेहरू जी के मन में गांधी जी के प्रति अटूट श्रद्धा उत्पन्न हो गये। इसलिए जब 1918 में ब्रिटिश सरकार ने रॉलेट एक्ट लाया तो गांधी जी के द्वारा रॉलेट एक्ट विरोधी आन्दोलन में नेहरूजी ने भाग लिया। होमरूल लीग के आन्दोलन के समर्थन और रॉलेट एक्ट के विरोध के क्रम में नेहरूजी को महात्मा गांधी से साक्षात्कार हुआ। उन्हें देखकर नेहरूजी के मन कौतुहल हुआ क्योंकि गांधी के साधारण वस्त्र और बोलने की शैली ने नेहरूजी को व्यवहारिक जीवन के क्षेत्र में प्रभावित किया। उन्होने महसूस किया कि इतना साधारण रहने वाला व्यक्ति पूरे भारत राष्ट्र के लिए लड़ रहा है। इस भावना ने नेहरूजी के मन गांधी के प्रति आकर्षण उत्पन्न किया और हमेशा गांधी से मिलने लगे तथा उनके निकट रहकर उनकी तकनीकी को सीखने का प्रयत्न करने लगे। नेहरू जी गांधी जी के सान्निध्य में रहकर उनके व्यक्तिगत जीवन के सिद्धान्तों और राजनीतिक जीवन के सिद्धान्तों को सीखने का प्रयत्न करते रहें। गांधी जी उनके अति प्रिय व्यक्ति बन गए।

1919 में जालियाँवाला बाग की घटना हुइ और गांधी जी मर्माहत हुए। नेहरू जी भी और कांग्रेस के सभी नेतागण मर्माहत हुए। उस समय नेहरू जी ने गांधी जी से अनेकों बार मिलकर ब्रिटिश सरकार की निन्दा की। नेहरू जी का यौवन के गर्म में एक खून से गर्म भाषा निकलती थी जिसे समय–समय पर गांधी जी ठंढ़ा कर देते थे। जालियाँवाला बाग की घटना की कांग्रेस ने भयंकर रूप से निंदा की और ब्रिटिश सरकार का विरोध किया। जालियाँवाला कांड को लेकर पंजाब में कर्फयू लागू किया की गया फिर भी कांग्रेस ने अपना कार्यक्रम चलाया, जिसके कारण सरकार के कान खड़े हुए और उसकी इन्क्वायरी का आदेश ब्रिटिश सरकार ने दिया। यह सब नेहरूजी के समक्ष होता रहा और उस समय गांधी जी की कार्यशैली से नेहरू जी बहुत ही प्रभावित हुए। गांधी जी की संघर्ष की अहिंसात्मक प्रणाली नेहरू को पसंद आयी। उन्होने ब्रिटिस सरकार पर नियंत्रण करने के लिए उपाय सोचने के लिए बार–बार आग्रह किया। नेहरूजी और कांग्रेस के अन्य नेताओं के आग्रह के कारण गांधी जी ने सोचना प्रारंभ किया।

1919 के अखिल भारतीय कांग्रेस अधिवेशन में गांधी जी ने 1920 में असहयोग आन्दोलन चलाने का प्रस्ताव रखा जिसे बहुमत से पारित कर दिया गया। इससे गांधी की लोकप्रियता में व्यापक रूप से विकास हुआ। गांधी जी के द्वारा चलाये जाने वाले आन्दोलनों के प्रति कांग्रेस आस्वस्त था। नेहरूजी भी इस अवसर पर महात्मा गांधी के साथ रहे । नेहरू जी को यह विश्वास हो गया था कि गांधी जी का हर कार्य सही ढंग से होता है। महात्मा गांधी ने 1920 के अप्रैल से असहयोग आन्दोलन चलाया। इस आन्दोलन में अंग्रेजों के सभी कार्यों में असहयोग करना था घर पर काम करनेवाले व्यक्ति से लेकर कार्यालय तथा फैक्ट्रीयों में भी असहयोग आन्दोलन चलाया गया। नेहरू जी ने इसमें सक्रिय भूमिका निभायी। उन्होंने इलाहाबाद, कानपुर, वाराणसी, आगरा आदि जगहों का दौरा किया और असहयोग आन्दोलन के पक्ष में अपना भाषण दिया तथा जन जागृति एवं जनसमर्थन प्राप्त करने में लगे रहे। महात्मा गांधी के द्वारा चलाया गया यहाँ आन्दोलन राष्ट्रव्यापी था। इस आन्दोलन को व्यापक रूप में जन सहयोग मिला। सारी फैक्ट्रियाँ बन्द रही, सारे कार्यालय बन्द रहे तथा अंग्रेज ऑफिसरों का निजी निवास पर भी काम करने लोग नही गये। यह आन्दोलन पूरे राष्ट्र में जोर–शोर से चलाया गया । नेहरू जी इस आन्दोलन के प्रति उत्साहित थे और दिलोजान से परिश्रम करते रहे। संयोग से इस आन्दोलन के क्रम में चौरा–चौरी हिंसा कांड हो गया। गांधी जी ने इस अन्दोलन को पूर्णरूप से अहिंसात्मक तौर पर चलाने का निदेश दिया था। परन्तु इसे जनता अहिंसात्मक रूप से नहीं चला पाई जिसके कारण गांधी जी को यह आन्दोलन स्थगित करना पड़ा। इस आन्दोलन के स्थगित होने से नेहरू जी को बहुत दुख हुआ। उन्होंने गांधी जी से कहा कि यह आन्दोलन कितना संगठित होकर राष्ट्रव्यापी रूप से चल रहा था। क्या आवश्यता थी इस आन्दोलन को स्थगित करने की इतने बड़े राष्ट्र में इतनी छोटी–छोटी घटनायें होती रहती हैं। इस पर गांधी जी ने कहा कि हमने पूर्ण अहिंसात्मक आन्दोलन चलाया था परन्तु संयोग से यह हिंसात्मक बन गया। हम हिंसा से ब्रिटिश सरकार को परास्त नही कर सकते। यदि सरकार हिंसा का बदला हिंसा से ले तो हम विजयी नही प्राप्त कर सकते। इसलिए मैंने इस आन्दोलन को स्थगित कर दिया। नेहरू जी गांधी जी के विचारों से इतने प्रभावित थे कि वे उत्तर नहीं दे सके।

असहयोग आन्दोलन के बाद जब गांधी जी ने सत्याग्रहियों को स्वतंत्रता संग्राम के लिए तैयान करना शुरू किया। उन्हें सत्यग्रहीं का प्रशिक्षण देने का काम शुरू किया गया तो नेहरू जी भी महात्मा गांधी के निकट रहे और उनसे सत्याग्रहियों के प्रशिक्षण के तौर–तरीके सीखते रहे। प्रशिक्षण का काम बहुत दिनों तक चला और नेहरू जी इस प्रशिक्षण में भाग लेते रहे। उन्होंने प्रशिक्षण के क्रम में सत्याग्रही के विभिन्न चरित्रों का ज्ञान पाया। उन्होंने देखा कि एक सत्याग्रही सत्यवादी होता है। उसमें दृढ़ प्रतिज्ञ होने की क्षमता होनी चाहिए। सत्याग्रही के अहिंसात्मक साधनों का प्रयोग करना चाहिए। सत्याग्रही का आत्म–स्वावलम्बी होना चाहिए। सत्याग्रही को कष्ट सहन करने की क्षमता होनी चाहिए। उसे कितना भी कष्ट दिया जाय वह सहे परन्तु किसी भी प्रकार की हिंसक कार्यवाही न करें। इस प्रकार की प्रशिक्षण को नेहरूजी ने भी प्राप्त किया और स्वंय को एक स्वतंत्रता सेनानी के सत्याग्रही के रूप में ढ़ाला। इस प्रकार नेहरूजी महात्मा गांधी के सम्पर्क में रहकर अहिंसात्मक स्वतंत्रता संग्राम के तौर–तरीकों को सीखते रहे और गांधी जी के साधन के प्रति उनका विश्वास जमता गया। इस प्रकार से वे महात्मा गांधी के अहिंसक सिद्धान्त के प्रति पूर्णरूपेण आश्वस्त हो गये इन सब तत्वों के आधार पर कहा जा सकता है कि गांधी जी कि विचारों और सिद्धान्तों के प्रति नेहरूजी की अगाध श्रद्धा हो गए।

महात्मा गांधी ने जब पूरे भारत में अछूतों उद्धार कार्यक्रम चलाया और छूआ–छूत को समाप्त करने का आह्वान किया तो नेहरू जी ने भी उसमें सक्रिय भूमिका निभानी प्रारम्भ की अछूतों के यहां भोजन करना, उनको स्वच्छ रहने का परामर्श देना, उनकी बस्तियों की सफाई करना, उनके साथ रहकर सभी कार्यों में के सहयोग देना। उनके यहाँ किसी प्रकार के उत्सव में भाग लेना । उनके मन में राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत करना और उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित करना आदि कार्य नेहरू जी ने गांधी जी के निदेशन पर किया। अस्पृश्यता निवारण के लिए नेहरू जी ने इलाहाबाद के शहरी क्षेत्रों से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर सवर्णों को यह सलाह दिया कि अछूतों के साथ मधुर व्यवहार करना चाहिए और उनका शोषण किसी भी कीमत पर नही किया जाय उन्हें समाज में बराबरी का दर्जा दिया जाय तथा सामाजिक न्याय की स्थापना की जाय। नेहरूजी ने महात्मा गांधी के निर्देश पर खुले दिल से अछूतों उद्धार कार्यक्रम में भाग लिया और कार्यक्रम को सफल बनाने में अथक परिश्रम किया। ये सभी बातें इस तथ्य को उजागर करती हैं कि महात्मा गांधी के विचारों से नेहरू जी व्यापक रूप से प्रभावित हुए और उनके सिद्धान्तों के प्रति गहरी आस्था दिखाई। स्वतंत्रता संग्राम के समय गांधी जी यह महसूस किया कि धार्मिक क्षेत्र में अछूतों को मंदिरों में पूजा–अर्चना की छूट नही मिल रही है। इसलिए गांधी जी ने मंदिरों में अछूतों को प्रवेश दिलाने का कार्यक्रम बनाया और कांग्रेस पार्टी के द्वारा इसका कार्यान्वयन कराया इस कार्यक्रम में भी नेहरू जी ने अथक प्रयास करके हरिजनों और अछूतों का मंदिरों में जाकर पूजा–अर्चना करने के लिए प्रेरित किया। इस कार्य में नेहरू जी को सवर्णों के व्यापक विरोध का सामना करना पड़ा और नेहरू जी इन विराधों की परवाह किए बिना इस कार्य को संचालित करते रहे। उन्होंने अछूतों उद्धार कार्यक्रम को व्यापक रूप में सफल बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

निष्कर्ष:

इन तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि नेहरू जी गांधी जी के विचारों से व्यापक रूप में प्रभावित होकर भारतीय समाज की बुराईयों को समाप्त करने में दिलोजान से भाग लेना प्रारंभ किया। गांधी जी के समाज सुधार योजना नेहरू जी के मन में अति अच्छा लगा। उन्होंने इस बात को सोचा कि जब तक अछूतों को विकसित करके स्वतंत्रता संग्राम में उन्हें भाग लेने के लिए प्रेरित नहीं किया जायेगा तब तक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सफलता नही मिलेगी क्योंकि भारत में अछूतों की संख्या विस्तृत तादाद में थी। स्वतंत्रता संग्राम में समय यह देखा गया कि भारतीय समाज में बाल– विवाह की प्रथा एक बुराई के रूप में विद्यमान है। गांधी जी के निदेश पर कांग्रेस ने इसे भी समाप्त करने का मन बनाया। इसके लिए कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने

गाँव–गाँव में घूमकर यह चेतना जागृत करना प्रारम्भ किया कि लड़कियों का कम उम्र में विवाह नही करना चाहिए। इस अभियान में नेहरू जी भी सम्मिलित हुए और इलाहाबाद के विभिन्न क्षेत्रों में घूम–घूमकर विकसित किया। उन्होंने अन्तर्जातीय विवाह का भी परामर्श दिया और उस समय पूरे राष्ट्र में हजारों कांग्रेस के सदस्यों ने अन्तर्जातीय विवाह भी किया तथा बाल–विवाह की प्रथा का समाप्त करने में जोरदार भूमिका निभायी।

संदर्भ–सूचीः

1. नेहरू जवाहर लाल डिस्कवरी ऑफ इंडिया (प्रथम संस्करण 1946 रीप्रिन्टेड 1983), इन्दृपस्थ प्रेस द्वारा प्रिंटेट हाउस वहादूर साह जफर मार्ग, नई दिल्ली, पृष्ठ– 354
2. सेलेक्टेड वकर्स ऑफ जवाहरलाल नेहरू भोलूम– 3. पृष्ठ–241
3. एन0 आटोबायोग्राफी, देखें फुटनॉट– 1 पृष्ठ–483
4. नेहरू जवाहरलाल एन0 आटोबायोग्राफी, देखें फुटनॉट–1, पृष्ठ–31
5. कृष्ण हठिसीगं, इन्दू से प्रधानमंत्री, (सस्ता साहित्य मंउल प्रकाशन, जोरो रोड, इलाहाबाद, 2005) पृष्ठ–37 एवं जवाहरलाल नेहरू एन0 आटोबायोग्राफी, देखें फुटनॉट–1, पृष्ठ–34–38
6. नेहरू जवाहरलाल ग्लिमसेज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री, प्रथम संस्करण, तृतीय संस्करण, 1984 न्यू दिल्ली, पृष्ठ–934
7. नेहरू जवाहरलाल, ए0 वंच0 ऑफ ओल्ड लेटर्स (प्रिटेंड वाई जेड0 टी0 बन्टू क्लेसिस ऐट लिटर्स प्रेस, एल0 टी0 डी0 बम्बे, नवम्बर 14. 1958) पृष्ठ–500
8. जवाहरलाल नेहरू स्पीचेज सितम्बर 1957, अप्रैल 1963 भौलूम–4, (पब्लिकेशन डिविजन, मिनिस्ट्री ऑफ इनफोरमेशन एड ब्रॉडकास्टिंग, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, न्यू दिल्ली, फस्ट पब्लिकेशन, अगस्त 1964), पृष्ठ–392
9. जवाहरलाल नेहरू आटोबायोग्राफी देखें फुटनॉट–1, पृष्ठ–31–33, 40–47